Notes by Akhilesh Kumar (GT Assist. Professor)
J K College Biraul Darbhanga
YouTube : A Commerce Education

Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUL, DARBHANGA

FOR-LNMU B. Com part-2 Subsidiary paper -3 Indian economy and entrepreneurship development

***Unit- 5 Entrepreneurship Development* And For I. com**

Entrepreneurship, revision

Easy to Understand the concept

प्रश्न - "उधमी, प्रबंधक से बड़ा होता है, वह नव प्रवर्तक तथा प्रवर्तक दोनों है" / इस कथन को स्पष्ट करते हुए उद्यमी के विभिन्न प्रकार बताइए / *("The Entrepreneur is more than a manager. He is an innovator and promoter well." Explain this statement and describe the various types of Entrepreneur.)*

उत्तर- कुछ व्यक्ति उधमी प्रबंधक को एक ही मानते हैं, जबकि दोनों एक दूसरे से अलग-अलग है प्रबंधक किसी उपक्रम का प्रबंध करता है, उधमी किसी नवीन उपक्रम की स्थापना करने की जोखिम उठाता है, आवश्यक संसाधन एकत्रित करता है, तथा उसका प्रबंध एवं नियंत्रण करता है|

उधमी, नेतृत्व, सर्जनात्मक नवाचार संबंधी कार्य करता है फ्रेज का कहना है की उधमी प्रबंधक से बड़ा होता है| उधमी नव प्रवर्तक एवं प्रवर्तक दोनों ही है| उपक्रम का आकार बढ़ने पर उधमी अपनी सहायता हेतु प्रबंध की नियुक्ति करता है, इस प्रकार प्रबंधक उद्यमी के सेवक के रूप में कार्य करता है /

उधमी के प्रकार

(Types of Entrepreneur)

- ***नव-प्रवर्तन योग्यता के आधार पर :** सामान्यता प्रत्येक अर्थव्यवस्था का विकास स्तर अलग-अलग होता है जहां विकसित अर्थव्यवस्था उत्साही उद्यमियों को जन्म देती है वही अविकसित अर्थव्यवस्था में आलसी, सर मिले कुछ भी जन्म लेते हैं|*

  क्लीयरेंस डेन्हाफ़ ने विकास स्तर पर आधारित चार प्रकार के उद्यमियों का वर्णन किया है

i. ***'आलसी' उधमी (Dronne Entrepreneurs)–** आलसी' उधमी नव कारणों के प्रति उदासीन रहता है इस प्रकार का उधमी आरामदायक जीवन व्यतीत करना चाहता है, वह जोखिम का सामना करना एवं चुनौतीपूर्ण कार्य करना पसंद नहीं करता है| उसका उद्देश्य को किसी प्रकार चलाते रहना है,*

इसी कारण आलसी आदमी का व्यवसाय लंबे समय तक नहीं चलता और ना ही व्यवसाय शीघ्र तक पहुंचता है |

ii. **नव-प्रवर्तक उधमी (innovating entrepreneurs)–** जो उद्यमी अपने व्यवसाय में नए-नए परिवर्तन करता रहता है वह नव प्रवर्तक उधमी कहलाता है| उदाहरण के लिए नई वस्तु का उत्पादन, नया कच्चा माल, उत्पादन की नई विधि, नए यंत्र उपकरण, नए बाजार एवं प्रबंध व्यवस्था आदि को अपने व्यवसाय में लागू करना|

इस प्रकार के उद्यमी विकसित राष्ट्रों में पाए जाते हैं, क्योंकि वहां अनुशासन के अत्यधिक अवसर होते हैं और नई वस्तु के उपभोग के लिए जनता के पास पर्याप्त की शक्ति होती है|

'शुंपीटर' के अनुसार, "नव प्रवर्तक उधमी किसी भी नए आविष्कार को क्रियान्वित करने के उत्पादन के तरीकों में सुधार करने या उसे क्रांति लाने का कार्य करते हैं |" यह उधमी अपेक्षाकृत अधिक चुनौतियां पूर्ण कार्य करते हैं |

iii. **सावधान उद्यमी (Fabian Entrepreneures)–** जब कोई उधमी सफल उद्यमी की नकल सावधानीपूर्वक करता है, तो ऐसे उधमी को सावधान उधमी कहते हैं | यह उधमी

जहां तक हो सके पुरानी पद्धति पर ही कार्य करना पसंद करता है यह उद्यमी नई बातों को अपनाकर कोई भी जोखिम नहीं लेना चाहता यह उधमी तब तक सफल उद्यमियों की नकल नहीं करता, जब तक कि उसे विश्वास ना हो जाए कि यही परिवर्तन को ना अपनाया तो हानि उठानी पड़े सकती है | ऐसे उधमी प्राय: हैं अविकसित राष्ट्रों में ही पाए जाते हैं |

iv. 'नकलची' उधमी (Implicative Entrepreneurs)- इस प्रकार के उधमी सफल नवकारणों की नकल करते हैं, और नव-हिटप्रवर्तक उद्यमियों द्वारा आरंभ किए गए सफल परिवर्तनों को अपने उद्योग में अपना लेते हैं ये उधमी अपेक्षाकृत कम जोखिम लेते हैं यह नई परिवर्तन के लिए अनुशासन पर कुछ भी खर्च नहीं करते है, बल्कि सफल उद्यमियों के अनुकरण करके ही लाभ उठा लेते हैं यह प्रवृत्ति विकासशील देशों में पाई जाती है |

सामाजिक लाभ की दृष्टि से (From the Angle of Social Benefit)- सामाजिक लाभ की दृष्टि से उधमियो को दो भागों में बांटा गया है-

1. **शोषक उद्यमी (Exploitative Entrepreneur)– वह उधमी जो केवल स्वयं के हित में कार्य करता है 'शोषक उधमी' कहलाता है यह उधमी समाज के हित में कार्य न करके सबके अत्यधिक लाभ अर्जित करने वाला होता है, यह सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति उदासीन होता है संक्षेप में यह उधमी स्-केंद्रित होता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा करता है |**

2. **आदर्श उधमी (Model Entrepreneur)– इस प्रकार के उद्योगों में लाभ कमाने के साथ-साथ सामाजिक हित में कार्य करने की प्रवृत्ति भी होती है | ऐसे उधमी अपने व्यवस्थाएं को सामाजिक हित में एवं लाभ के लिए संचालित करते हैं| ऐसे उद्यमी अपने व्यवसायिक वे औद्योगिक क्रियाओं के द्वारा सामाजिक लक्ष्यों की पूर्ति करते हैं| ये उधमी समाज में रोजगार, आय, आर्थिक**

उपयोगिताओं व उच्च जीवन स्तर के लिए प्रयत्नशील रहते हैं |

विकास की गति के आधार पर (On the Basis of Development Momentum)- विकास की गति के आधार पर उद्यमियों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है-

1. **स्थानीय व्यापारी (Local Traders)-** यह वह धनी होते हैं जो अपने क्षेत्र में व्यवसाय करते हैं इनका कार्य क्षेत्र स्थान में होता है यह अपनी आर्थिक क्रियाओं को किसी क्षेत्र में विशेष तक ही सीमित रखते हैं|
2. **मूल परिवर्तक (Prime Mover)-** इस प्रकार के उद्योग विकास के मूल प्रवर्तक होते हैं| ऐसे उधमी विकास की प्रक्रिया एवं कार्यों को प्रभावी ढंग से गतिमान बनाते हैं यह उधमी व्यवसाय को सदैव विकसित करने पर बल देते हैं
3. **अनुषंगी (Satellite)-** इस प्रकार के उद्यमी सहायक उद्योगों एवं व्यवस्थाओं को भी मूल व्यवस्थाएं के साथ-साथ चलाते हैं प्रारंभ में इस प्रकार के उधमी की भूमिका पूर्ति करता एवं मध्यस्थ की होती है किंतु धीरे-धीरे में उद्योग का स्वतंत्र संचालन करने लगते हैं |

4. लघु नव प्रवर्तक (Minor Innovator)- ऐसे उधमी अल्प मात्रा में नव प्रवर्तक का कार्य करके आर्थिक विकास की गति को बल प्रदान करते हैं यह उधमी समाज के संसाधनों के श्रेष्ठ उपयोग खोजते हैं उन्हें उत्पादक एवं लाभप्रद कार्यों में भी नियोजित करते हैं तथा विकास की गति में वृद्धि करते हैं|
5. आरंभिक (Initiator)- इस प्रकार के उधमी नव प्रवर्तक की प्रक्रिया में भाग लेकर विकास को गति प्रदान करते हैं यह 19 अवयव परिवर्तनों की कल्पना नहीं करता किंतु उनके विचार पर फैलाव की अवस्था में सहभागी बनता है |
6. प्रबंधक (Manager)- प्रबंधक उद्यमी कुशल प्रबंध के नियंत्रण के द्वारा उपक्रम का सफल संचालन करता है किंतु है उपक्रम के विकास एवं विस्तार के लिए योजनाएं नहीं बनाता है| ऐसे उधमी में प्रबंधकीय कौशल असीमित होता है |

विभिन्न क्रियाओं के आधार पर(On the Basis of Various Activities) : कार्ल वेस्पर विद्या क्रियाओं के आधार पर उद्यमियों के निम्नलिखित प्रकार बताए हैं-

i. पूंजी संचायक(Capital Aggregators)– इस प्रकार के उद्यम पूंजी संग्रह में विशेष दक्षता रखते हैं बैंकों में बीमा कंपनियों

जिनमें व्रत संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता होती है की स्थापना में सहायता करते हैं |

ii. सट्टा लगाने वाले(Speculators)- यह एक सभ्य कोई गम नहीं करते उन्हें विभिन्न प्रकार के स्वामित्व प्रपत्रों में व्यवसाय करके के लाभ कमा लेते हैं |

iii. एकल स्व-नियुक्त उधमी(Solo Self-employed Entrepreneur)– ये उद्यमी स्वतंत्र रूप से एव स्व-नियुक्त अपना कार्य करते हैं जैसे- रंगमंच के कलाकार, डॉक्टर, एडवोकेट आदि |

iv. मितव्ययितापूर्ण उधमी(Economy Scale of Exploiters)- इस प्रकार के उधमी उपभोक्ताओं की क्रिया शक्ति बढ़ाने का प्रयास करते हैं, इसमें छुट भंडार, डाक व्यवस्था एक आदि को सम्मिलित किया जाता है|

v. प्रारूप उधमी(Pattern Multiplers)- यह उधमी उत्पादन विधियों में परिवर्तन करके वस्तुओं के प्रारूप में वृद्धि करता है |

vi. अधिग्रहण उधमी(Takeover Artists)– इस प्रकार का उद्यमी छोटी-छोटी फर्मो का अधिग्रहण करके उनका संचालन करता

है कभी-कभी वे इन फर्मो का अपने व्यवसाय में पूर्णतः है सर संविलयन कर लेते हैं |

vii. अप्रयुक्त संसाधन विदोहन करता(Unutilised Resource Exploiters)– इस प्रकार के उधमी प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करके उन्हें उत्पादक कार्यों के लिए उपलब्ध कराते हैं |

viii. कार्य शक्ति निर्माता(Work Force Builders)- इस श्रेणी में वह है आदमी आते हैं जो स्वतंत्र रूप में यंत्र शालाओं, कंप्यूटर, एयरलाइंस सेवा फर्म आदि का निर्माण एव संचालन करते हैं |

ix. उत्पाद नव प्रवर्तक(Product Innovators)- साउथ में नए-नए उत्पादों के डिजाइन तैयार करते हैं तथा उन का निर्माण कर के बाजार में लाते हैं | नए उत्पादों को निर्माता करने के कारण ऐसे उद्यमियों की प्रतिस्पर्धा स्थिति सुदृढ़ होती है |